दिनांक 19.02.2019

प्रतिवेदन

"राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती समारोह के उपलक्ष्य में एक दिवसीय कार्यशाला"

शासकीय कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के राजनीति विज्ञान की विभागाध्यक्ष सुश्री आबेदा बेगम द्वारा प्राचार्य के कुशल मार्गदर्शन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी 150वीं जयंती समारोह कार्यांजलि / कार्ययोजना में कियान्वयन के परिप्रेक्ष्य में एक दिवसीय कार्यशाला "वर्तमान संदर्भ में गांधी जी के विचारों की उपादेयता" विषय पर आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ मॉ सरस्वती जी और महात्मा गांधी के तैलचित्र पर पुष्प अर्पित कर किया। प्रभारी प्राचार्य डा. एम.एल. साव पसाध्यापक अर्थशास्त्र की उपस्थिति एवं अन्य उप. सहायक पसाध्यापक के स्वागत उपरांत डा.एम.एल साव ने अपने व्याख्यान में बताया कि हमारे देश को आजादी सहज रूप से नहीं मिली है। इसे दिलाने में महात्मा गांधीजी का अमूल्य योगदान है। डॉ. साव ने गांधीजी के आदर्शो को विद्यार्थियों को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

सुश्री आबेदा बेगम विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान ने बताया कि गांधी जी के नेतृत्व में चला आजादी का आंदोलन उनकी अहिंसक सोच के कारण पूरी दुनिया में जाना जाता है। आजादी की लड़ाई के वक्त गांधीजी ने मानव अधिकारों की आवाज भी उठाई। लोकतांत्रिक भारत हर वर्ग अपने अधिकारों के लिये लड़ा और इसमें काफी हद तक कामयाब भी रहा। गांधी को हमसे अपेक्षा थी कि हम सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह के उनके आदर्श जीवन मूल्यों को अपना कर सामाजिक समरसता पूर्ण समाज की रचना करेंगे। दुनिया भर के लिये गांधी आज भी प्रेरणा स्त्रोत बने हुए हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के राष्ट्रीय आंदोलनों में गांधी जी का योगदान रहा है जैसे असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन में समाज के सभी वर्गो ने स्वस्फूर्त भाग लिया। वर्तमान समय में गांधीजी के विचारों की उपादेयता हैं। उन्होंने शिक्षा पर बहुत जोर दिया। वे कथन, व्याख्यान और सवाल जवाब की विधि को स्वीकार करते थे। उनका कहना था कि बच्चों को जो भी सिखाया जाये वास्तविक ढंग से सिखाया जाये।

गांधीजी गांव का विकास चाहते थे। वे मानते थे कि गांव की उन्नति होगी तो देश की उन्नति होगी। आर्थिक दृष्टिकोण से गांधीजी का आर्थिक स्वराज का स्वप्न था। सबका सामाजिक दर्जा एक हो, किसी को भी अन्न और वस्त्र के अभाव की तकलीफ न हो। 1921 में "यंग इंडिया" में अपने एक लेख में "क्या चरखा मशीनीकरण के खिलाफ है" उन्होंने लिखा मैं किसी भी ऐसी उच्च स्तरीय मशीन के पक्ष में हूं जिससे भारत की गरीबी मिटाई सके।

स्वच्छता के बारे में उनका विचार था। स्वच्छता स्वतंत्रता के जितनी ही महत्वपूर्ण हैं इसलिए हर इंसान को इसके लिए काम करना चाहिए। स्वास्थ्य के बारे में उनका कहना था कि "जीवन की असल पूंजी स्वास्थ्य ही हैं न ही सोने और चांदी के टुकड़े।" स्पष्ट है महात्मा गांधी का समूचा जीवन दर्शन एक सत्याग्रही का जीवन दर्शन है।

श्री के.के. द्विवेदी सहायक प्राध्यापक भूगोल ने अपने व्याख्यान में महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व विकास और राष्ट्र विकास में योगदान पर चर्चा की। उन्होंने विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकास के सूत्र बतायें और महात्मा गांधी का जीवन–दर्शन समझाया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में बताया कि सत्य, अहिंसा, समय प्रबंधन, अनुशासन, स्वच्छता जैसी बातों को सभी को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

डा. श्रीमती सुषमा तिवारी, सहायक प्राध्यापक संस्कृत ने गांधीजी का अनुसरण करने की विद्यार्थियों को सीख दी। उन्होंने कुटीर उद्योगों संबंधी गांधीजी के विचारों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में डा. साव, श्री के.के. द्विवेदी, डा. सुषमा तिवारी, डा. बृजबाला उइके, डा. दुर्गा शर्मा और बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन राजनीति विज्ञान की विभागाध्यक्ष सुश्री आबेदा बेगम ने किया।

विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान
(सुश्री आबेदा बेगम)
शास. कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, राजनांदगांव

प्राचार्य
शास. कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ.ग.)

प्रतिवेदन

"गांधी जी की कार्य पद्धति सत्याग्रह"

दिनांक 18.02.19

राजनांदगांव. शासकीय कमलादेवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग. के राजनीति विज्ञान विभाग में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती समारोह के परिप्रेक्ष्य में राजनीति विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष सुश्री आबेदा बेगम सहायक प्राध्यापक राजनीतिक विज्ञान ने गांधी जी की कार्य पद्धति सत्याग्रह के विचार पर एक घंटे की विशेष कक्षा ली। अपने व्याख्यान में विभागाध्यक्ष आबेदा बेगम ने बताया कि सत्याग्रह का भावार्थ है, सत्य की ही जीत होती है।

सत्याग्रह का दर्शन :– इसमें सत्य के बारे में अनुरोध करते हुए अत्याचारी का विरोध करना उनके सामने सिर नही झुकाना, उनकी बात को नहीं मानना शामिल है। अत्याचारी और अन्यायी को सभी कामयाबी मिलती है लोग उससे डरते है। लेकिन यदि व्यक्ति यह प्रतिज्ञा कर ले कि "तुम चाहे जो करो हम तुम्हारी आज्ञा का पालन न करेंगे तो जब दमनकारी को यकीन हो जाए कि वह अपनी आज्ञा नहीं मनवा सकता तो वह इसे निरर्थक समझकर छोड़ सकता है।

सत्याग्रही के गुण :–

1. मन वचन कर्म से अहिंसा
2. शत्रु को न मारना, पीटना, न कठोर वचन कहना, न उसका बुरा करना।
3. सत्य
4. श्रम
5. निर्भयता
6. अस्पृश्यता निवारण

सत्याग्रही के लिये नियम :–

1. अपने मन में गुस्से का अभाव
2. विरोधियों का क्रोध सहन करना।
3. बदले की भावना का अभाव।
4. गलत बात नहीं कहना।

सत्याग्रह के प्रकार

1. असहयोग आंदोलन – 1920 – 21 ब्रिटिश सरकार की नौकरी अदालत, स्कूलों, कालेजों का बहिष्कार
2. सविनय अवज्ञा भंग 1930–31 नमक पर लगाया गया कर अन्यायपूर्ण, गुजरात के समुद्र तट पर डाण्डी नामक स्थान पर अहमदाबाद से पैदल यात्रा की
3. व्यक्तिगत सत्याग्रह 1940–41 विनोबा भावे प्रथम सत्याग्रही थे।

सत्याग्रह के साधन :–

1. असहयोग
2. सविनय कानून भंग
3. उपवास

4. हिजरत
5. धरना
6. हड़ताल
7. सामाजिक बहिस्कार

निष्कर्ष :– सत्याग्रह की खोज गांधी जी का बहुत बड़ा योगदान है यह एक नैतिक दर्शन है। सामाजिक राजनैतिक क्षेत्र में सत्याग्रह का विचार महत्वपूर्ण है।

विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान
(सुश्री आबेदा बेगम)
शास. कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, राजनांदगांव

प्राचार्य
शास. कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ.ग.)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती समारोह
कार्यांजलि / कार्ययोजना के क्रियान्वयन के परिप्रेक्ष्य में
विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान द्वारा
एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती समारोह
वर्ष 2018 -19 -20
कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर